**कैमरा एंगल-शाट्स---**

--**एक्सट्रीम क्लोज अप शॉट (Extreme Close up shot) -**इस शॉट में विषय के शारीर के किसी एक हिस्से के बारे में अत्यधिक विस्तार से बबताया जाता है. लोगों के लिए, ईसीयू का उपयोग भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किया जाता है

--**क्लोज अप शॉट (Close up shot) –** इस शॉट में विषय की एक विशेष विशेषता या किसी भाग को पूरे फ्रेम में रखते हैं. किसी व्यक्ति के करीब होने का अर्थ आम तौर पर उसके चेहरे का करीब होना है.

--**मिड क्लोज अप (Mid close up)** – यह शॉट क्लोज अप और मिड शॉट के बीच का शॉट होता है यह शॉट चेहरे को और अधिक स्पष्ट रूप से दिखाता है, बाकी शारीर भी सहज रूप से दीखता है.

--**मिड शॉट (Mid Shot) –** इसमें विषय के कुछ हिस्से को और अधिक विस्तार से दिखाया जाता है, जिससे दर्शकों को महसूस होता है कि वो जिस विषय को देख रहे हैं वह फ्रेम में पर्याप्त दिख रहा है. वास्तव में, यह एक धारणा है कि अगर आप एक सामान्य वार्तालाप कर रहे हैं तो आप "एक नज़र में" एक व्यक्ति को कैसे देखेंगे. आप उस व्यक्ति के निचले हिस्से पर कोई ध्यान नहीं दे रहे होंगे, इसलिए फ्रेम का वह भाग अनावश्यक है.

--**वाइड शॉट (Wide Shot) –** इस शॉट में फ्रेम में पूरा विषय दीखता है. व्यक्ति के पैर लगभग फ्रेम के नीचे होते हैं, और उसका सिर लगभग शीर्ष पर होता है. स्पष्ट रूप से इस शॉट में विषय फ्रेम में बहुत कम चौड़ाई कवर करता है, चूंकि फ्रेम विषय के जितने करीब होगा उतना जायदा उसके शारीर का हिस्सा फ्रेम को कवर करेगा. विषय के कुछ भाग ऊपर एवं कुछ भाग निचे को सेफ्टी रूम (हेड स्पेस और फूट स्पेस) कहा जाता है - आप सिर के ऊपर वाले भाग को काटना नहीं चाहेंगे. यह असहज भी दिखाई देगा, यदि फ्रेम में पैर और सीर के ऊपर बिलकुल भी जगह खाली ना हो

--**वैरी वाइड शॉट (Very Wide Shot) –**वीडब्ल्यूएस शॉट में विषय दिखाई देता है, परन्तु असल में उसके आस-पास के वातावरण को दिखाने पर जोर दिया जाता है। यह एक स्थापित शॉट (Establish Shot) के रूप में भी काम करता है।

--**एक्सट्रीम वाइड शॉट (Extreme Wide Shot) -** ईडब्ल्यूएस में, फ्रेम इतनी दूर से दिखाया जाता है जिसमे विषय दिखाई भी नहीं देता है इस शॉट का उद्देश्य विषय के परिवेश को दिखाना होता है. ईडब्लूएस अक्सर एक स्थापित शॉट (Establish Shot) के रूप में उपयोग किया जाता है – इस शॉट को फिल्म के पहले शॉट के रूप में लिया जाता है, दर्शकों को यहाँ बताया जाता है कि आगे होने वाला एक्शन कहाँ पर हो रहा है.

--**कटअवे शॉट (Cutaway Shot) और कट इन शॉट (Cut-In Shot) -** एक **कटवे शॉट** वह होता है जो आमतौर पर मौजूदा फ्रेम से अलग कोई एक्शन होता है. यह एक अलग विषय हो सकता है या फ्रेम से सम्बंधित कोई एक्शन. वहीं **कट इन शॉट** फ्रेम केअन्दर के ही किसी भाग का क्लोजअप हो सकता है (जैसे हाथ का मूवमेंट).

(चित्र क्रमांक 5(i-1) देखें - ऊपर दिए गए लड़की के शॉट्स से हटकर ये बच्चे उसी गार्डन में खेल रहे हैं जो की **कटअवे** का काम करेंगे वहीं चित्र क्रमांक 5(i-2) में लड़की के हाथ का शॉट **कट इन शॉट** का काम करेगा).

कटअवे और कट इन शॉट को शॉट्स के बीच में “बफर” के रूप में उपयोग किया जाता है (जिससे एडिटिंग में साहयता मिलती है) और अतिरिक्त जानकारी देने या प्रोग्राम को थोड़ा और रोचक बनाने के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है.

--**टू शॉट (Two Shot) -**इस पर कुछ भिन्नताएं हैं, लेकिन मूल विचार यह है कि वह शॉट जिसमे दो लोग आरामदायक रूप से नज़र आयें. साक्षात्कार में इसका अक्सर प्रयोग किया जाता है, या जब दो प्रस्तुतकर्ता एक शो की मेजबानी कर रहे हैं  विषयों के बीच संबंध स्थापित करने के लिए टू-शॉट अच्छे हैं. किसी भी इंटरव्यू या स्पोर्ट्स ब्रीफिंग के दौरान इसका उपयोग सबसे जायदा किया जाता है जिसमे दो लोग आपस में एक दूसरे से बात करते हैं ,**टू शॉट** दो लोगों को पेश करने का एक स्वाभाविक तरीका है.

--**ओवर द शोल्डर शॉट (Over the shoulder shot) -** यह शॉट उस व्यक्ति के पीछे से बनाया जाता है जो विषय को देख रहा है। इस शॉट में विषय का सामना करने वाले व्यक्ति (जिसके पीछे से शॉट बनाया जा रहा है) को आम तौर पर लगभग 1/3 फ्रेम पर कब्जा होना चाहिए। यह शॉट प्रत्येक व्यक्ति की स्थिति को स्थापित करने में मदद करता है, और दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण से एक व्यक्ति को देखने का अनुभव मिलता है। दो लोगों की बातचीत के दौरान इन शॉट्स के बीच कट करना आम बात है

--**पॉइंट ऑफ़ व्यू शॉट (Point of view shot) -** यह शॉट विषय के दृष्टिकोण से एक दृश्य को दिखाता है. यह आमतौर पर इस तरह से संपादित किया जाता है जिससे यह स्पष्ट हो कि इसका **पॉइंट ऑफ़ व्यू (POV)** क्या है.

--**एरियल शॉट (Aerial Shot) -** इस शॉट को किसी हवाई उपकरण जैसे ड्रोन या हवाई जहाज से लिया जाता है जिसमे पुरे एक शहर या ग्राउंड या घटनास्थान का चित्र काफी ऊपर से लिया जाता है जिससे उस जगह के और उसके आस पास के पूरे घटनाक्रम का पता चल सके

----------

कैमरे से जुडी जरुरी शब्दावली।

[**शॉट (Shot)**](http://mediakagyan.blogspot.in/2017/06/framing.html)**:** सभी वीडियो अलग-अलग प्रकार के शॉट्स से बने होते हैं. एक शॉट मूल रूप से तब होता है जब आप कैमरे पर रिकॉर्डिंग बटन दबाते हैं और जब उस रिकॉर्डिंग को रोकते हैं यह एक शॉट कहलाता है. ये बिलकुल वैसा है जैसे हम एक फोटो एलबम बनाने के लिए कई व्यक्तिगत तस्वीरों को इकठ्ठा करते हैं, इसी तरह शॉट्स भी एक वीडियो बनाने के लिए इकट्ठा किये जाते हैं ।

[**फ्रेमिंग**](http://mediakagyan.blogspot.in/2017/06/framing.html)**और रचना (**[**Framing**](http://mediakagyan.blogspot.in/2017/06/framing.html)**& Composition)**: फ्रेम वह तस्वीर है जिसे आप व्यूफाइंडर पर (या मॉनिटर पर) देखते हैं। और संरचना (कम्पोजीशन) वह है जो एक तस्वीर फ्रेम के अंदर जो कुछ भी दिखता है उन सब विषयवस्तु के लेआउट को संदर्भित करता है - विषय क्या है, वह फ्रेम में कहाँ है, वह किस तरफ देख रहा है, पृष्ठभूमि (b**ackground**), फॉरग्राउंड (**foreground**), प्रकाश (**Lighting**) आदि।

[**ट्रांजीशन**](https://mediakagyan.blogspot.com/2020/03/transition.html)**(Transition)**: एक बड़ी कहानी को बताने के लिए एक सीक्वेंस में शॉट्स को जोड़ा (संपादित) जाता है । जिस तरह से किसी भी दो शॉट्स को एक साथ जोड़ जाता है, इसे ट्रांजीशन कहते हैं. आम तौर पर इसे कट (**cut**) ट्रांजीशन कहते हैं, जिसमें एक शॉट के तुरंत बाद दूसरा शॉट बदलता है. अधिक जटिल ट्रांजीशन में मिश्रण (**mixing**), वाइप (**wipes**), डीसोल्व (**dissolve**), फेड (**fade**) और डिजिटल इफ़ेक्ट (**digital effects**) शामिल हैं। एक मूविंग शॉट (**जैसे पैन शॉट**) को एक ट्रांजीशन के रूप में भी माना जा सकता है जिसमे एक शॉट से नए शॉट पर जाते हैं। कैमरा वर्क के काम में ट्रांजीशन बहुत महत्वपूर्ण है, आपको इस दौरान इसके बारे में लगातार सोचने की ज़रूरत है कि प्रत्येक शॉट अगले शॉट के पहले या उसके बाद में कैसे फिट होगा।

**पैन (PAN):**दायें से बाएं और बाएं से दायें कैमरा घुमाना.

**टिल्ट (TILT):** ऊपर और नीचे कैमरा घुमाना.
 **ज़ूम (ZOOM):**इन-एंड-आउट कैमरा घुमाना (यानी करीब और दूर.
 **आईरिस (एक्सपोजर):** आईरिस वह होता है जो कैमरे में प्रकाश को प्रवेश देता है.

**Iris (Exposure):**जायदा आईरिस का मतलब जायदा प्रकाश और उज्जवल तस्वीर.

**वाइट बैलेंस (White Balance) :** व्हाइट बैलेंस करना यानी कि सबसे पहले आप कैमरा को बताते हैं कि एक्चुअल व्हाइट क्या है और फिर आपका कैमरा बाक़ी सारे एडस्टमेंट ख़ुद ही कर लेता है.

**शटर (Shutter):**शटर का उपयोग स्टील कैमरा में होता है.
 **ऑडियो (Audio):** ध्वनि जो विडियो के साथ जाने के लिए दर्ज की जाती है.